नया ज्ञानोदय

मई 2019
40 रुपये

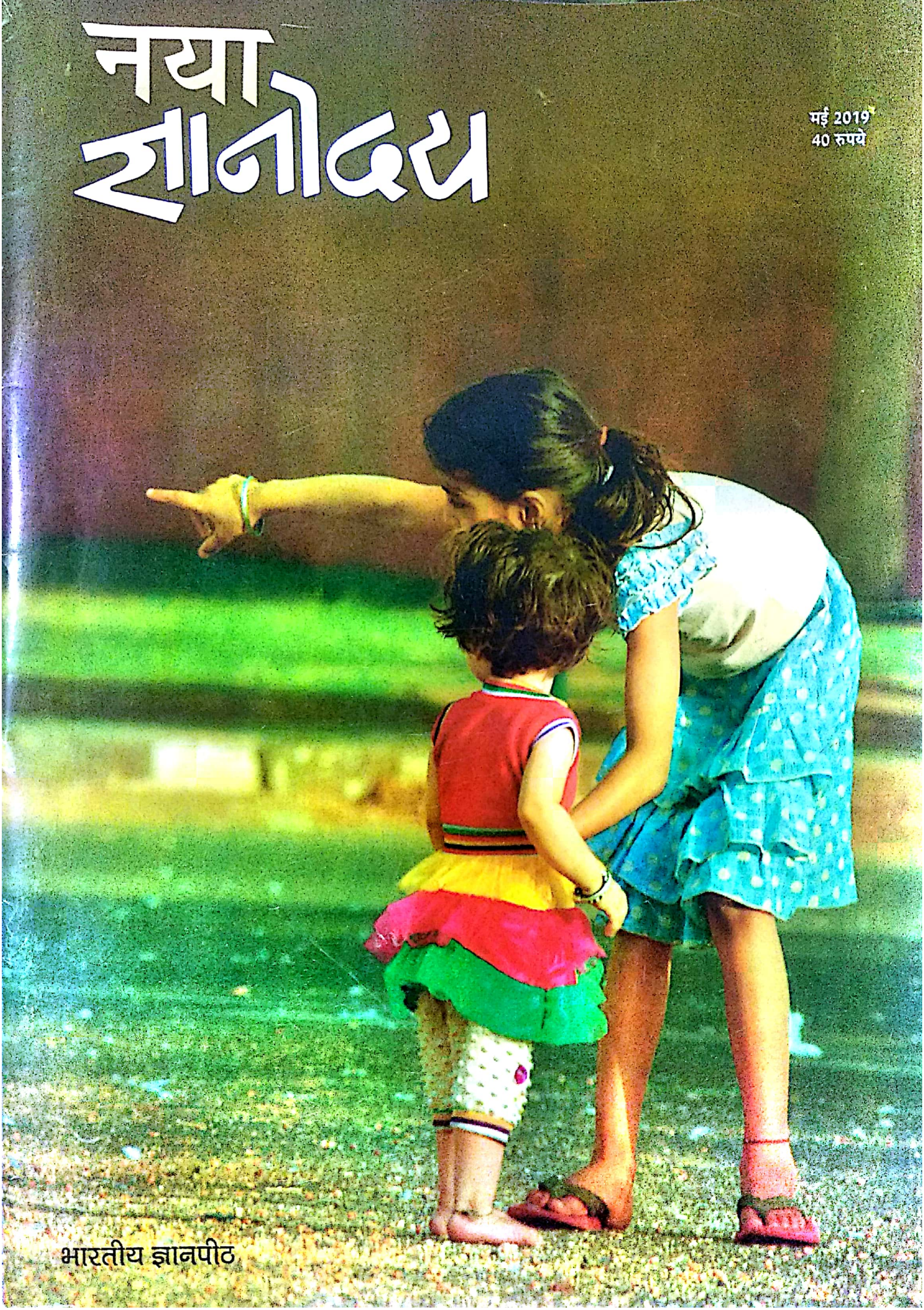

भारतीय ज्ञानपीठ

Scanned by CamScanner

पवन कुमार

ज्ञान गरिमा के गौरवशाली 75 वर्ष
भारतीय ज्ञानपीठ

सोज़ और साज़ की जादूगर थीं बेगम अख़्तर

बीसवीं सदी में जिन अदबी शख़्सियतों के मुआशरे को सबसे ज़्यादा मुतास्सिर किया है, उनमें ज़ाहिर तौर पर बेगम अख़्तर साहिबा एक हैं। ग़ज़ल गायकी में उनकी हैसियत 'न भूतो न भविष्यिति' वाली है। सच तो यह है कि यदि बेगम साहिबा ने ग़ज़ल गायकी को सम्मानजनक न बनाया होता तो ग़ज़ल सिर्फ़ किताबों और कोठों तक ही महदूद होकर रह जाती। उन्होंने ग़ज़ल और संगीत को इस तरह मिश्रित कर दिया कि दोनों एक-दूसरे की संगत से समृद्ध हुए और सही अर्थों में एक-दूसरे के पूरक बन गये। ग़ज़ल गाने की परम्परा हालाँकि उनसे पहले भी थी, लेकिन जिस अन्दाज़ से बेगम अख़्तर ने गाया वह उनसे पहले नहीं पाया गया था। ग़ालिब, मीर, मोमिन, शकील बदायूँनी, बहज़ाद लखनवी और जिगर मुरादाबादी को इतनी सहजता से शायद ही किसी ने गाया था।

बेगम अख़्तर को समझना है तो उन्हें ग़ज़ल गायकी से बहुत आगे तक जाकर देखना होगा। दरअसल वे एक अदबी विरासत हैं, ग़ज़ल गायकी उनके व्यक्तित्व का एक छोटा सा हिस्सा भर है। ग़ज़ल गायकी पर तो उनका अधिकार था ही ठुमरी, ख़्याल, दादरा, चैती, बारामासा पर भी उनका समान आधिपत्य था। उनका रहन-सहन, खान-पान, बोलचाल, पहनावा, वाकपटुता, हाजिर जवाबी, लखनवी तहज़ीब में रचा बसा था। वे लखनवी तहज़ीब की सबसे बड़े पैरोकारों में एक थीं। बेगम अख़्तर के जीवन के इन्हीं तमाम पहलुओं पर रोशनी डालने और उनकी ज़िन्दगी की तमाम परतों को खोलने का काम यतीन्द्र मिश्र ने 'अख़्तरी सोज़ और साज़ का अफसाना' के माध्यम से किया है। 'अख़्तरी सोज़ और साज़ का अफसाना' एक ऐसी किताब है जिसे प्रत्येक कलाप्रेमी की बुक सेल्फ में होना चाहिए। वाणी प्रकाशन ने बेगम साहिबा के 105वें जन्म वर्ष में इस किताब का प्रकाशन पर यकीनन पाये का काम किया है। इस किताब को स्मरणीय और संग्रहणीय बनाने में सम्पादक और प्रकाशक ने कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। सामग्री के प्रस्तुतिकरण से लेकर कलेवर और अन्दर के पृष्ठों को देखकर लेखक और प्रकाशक की परिष्कृत अभिरुचि को साफ़ तौर पर महसूस किया जा सकता है। उल्लेखनीय है कि सम्पादक यतीन्द्र मिश्र हिन्दी कवि होने के साथ-साथ संगीत और सिनेमा के लब्ध-प्रतिष्ठित अध्येता हैं तभी तो उनके द्वारा लिखित कृतियाँ शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी पर 'गिरिजा', नृत्यांगना सोनल मानसिंह से संवाद पर 'देवप्रिया', शहनाई उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ के जीवन व संगीत पर 'सुर की बारादरी' तथा पार्श्वगायिका लता मंगेशकर की संगीत-यात्रा पर 'लता : सुर-गाथा' पूर्व में प्रकाशित और लोकप्रिय हो चुकी हैं। 'अख़्तरी सोज़ और साज़ का अफसाना' इसी शृंखला में एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह बेगम अख़्तर के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को नक्काशी के साथ उकेरने का प्रयास है। यह कृति बेगम अख़्तर जैसी गायिका की नफ़ासत और उनकी कला के शामियाने के नीचे आने की कोशिश है। यह किताब बेगम अख़्तर के संगीत, उनके किरदार और उनके जीवन के इर्द-गिर्द फैले हुए उन दुर्लभ तथ्यों के इर्द-गिर्द बुनी गयी है, जिसके माध्यम से उस दौर को छोटी-सी कन्दील जलाकर देखा जा सकता है।

अख़्तरी सोज़ और साज़ का अफसाना
(जीवनी)
सम्पादक -यतीन्द्र मिश्र
वाणी प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : 395/-

यह किताब चार खंडों में विभक्त है, जिसमें पहले खंड में बेगम अख़्तर के जीवन और संगीत-यात्रा पर कई तरह से विचार-विमर्श किया गया है। इस विमर्श में शीला धर और सलीम किदवई जैसे गुणी संगीत विद्वान शामिल हैं। संगीत मर्मज्ञ डॉ. प्रवीण झा, सुशोभित सक्तावत और मोहित कटारिया ने भी इस कृति में महत्त्वपूर्ण लेख लिखे हैं। प्रख्यात लेखिका शिवानी और ममता कालिया जी के मशहूर संस्मरण भी इसमें सम्मिलित किए गये हैं। संगीत के जानकार अनीश प्रधान, कुणाल रे, सुनीता बुद्धिराजा की उपस्थिति के अलावा स्वयं लेखक यतीन्द्र मिश्र ने अपनी परिवार-परम्परा में व्याप्त अख़्तरीबाई फ़ैज़ाबादी की शिनाख़्त उसी दौर के सन्दर्भ में करने की कोशिश की है। डॉ. रख़्शंदा जलील, इक़बाल रिज़वी, मृत्युंजय और नरेन्द्र सैनी का लेखन भी अलग से बेगम साहिबा के सांगीतिक जीवन को समझने के लिए नयी राहें उपलब्ध कराता है। बेगम अख़्तर की शिष्याओं रीता गांगुली और शान्ती हीरानन्द के साक्षात्कार भी इस कृति की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हैं। इस कृति में बेगम अख़्तर साहिबा का एक दुर्लभ साक्षात्कार भी शामिल किया गया है। यह साक्षात्कार 1970 में विद्वान आचार्य कैलाश चन्द्रदेव

Scanned by CamScanner

बृहस्पति जी द्वारा लिया गया था। शास्त्रीय गायिका शुभा मुद्गल ने बेगम अख़्तर की गायिकी का सुन्दर और दिलचस्प सांगीतिक पाठ किया है, जो पाठकों के लिए यकीनन बेशकीमती तोहफा है।

इस किताब का दूसरा खंड बेहद रोचक है जिसे बेगम अख़्तर से जुड़ी छोटी-छोटी स्मृतियों, सूचनाओं, दृष्टान्तों, टिप्पणियों, दस्तावेज़ के माध्यम से रचा गया है। पूरी तरह शोध और स्मृतियों पर आधारित इस खंड में बेगम अख़्तर से जुड़े छब्बीस प्रसंगों के जरिए बेगम अख़्तर के उस तिलिस्म को पकड़ने की कोशिश की गयी है, जिसकी चर्चा हमेशा से संगीत के गलियारों में होती रही। इस खंड में उस्ताद बिस्मिल्ला ख़ाँ और लता मंगेशकर जी के साथ-साथ प्रकाश वढेरा, सुशीला मिश्र, संगीत महाभारतीय, पार्थ चटर्जी, यूनुस खान, हिमांशु बाजपेयी, मोहन नाडकर्णी, गजेन्द्र नारायण सिंह, योगेश प्रवीन, प्राण नेविल, नरहरि पटेल, कौमुदी मुंशी, सतीश चोपड़ा, श्रुति सादोलिकर, शान्ती हीरानन्द और मालिनी अवस्थी जैसे संगीत साधकों ने अपनी स्मृतियाँ अत्यन्त भावनात्मक रूप से साझा की हैं।

बेगम अख़्तर का जन्म 07 अक्टूबर, 1914 में जिला फ़ैज़ाबाद में नामी गिरामी तवायफ़ मुश्तरीबाई तथा वकील असगर हुसैन की सबसे छोटी सन्तान 'बिब्बी' के रूप में हुआ। छः-सात साल की उम्र में ही उन्हें गया और उसके बाद कलकत्ता पहुँचा दिया गया। कलकत्ता में संगीतज्ञ अता मुहम्मद खाँ (पटियाला घराना), तथा उस्ताद अब्दुल वाहिद खाँ (किराना घराना) से ग़ज़ल ठुमरी, दादरा और ख़्याल की बारीकियाँ सीखीं।

'बिब्बी' अब तक 'अख़्तरी' में तब्दील हो चुकी थीं। गायकी के लिहाज से तो वे परिपक्व हो रही थीं। उनकी परवरिश ऐसे माहौल में हुई थी जहाँ अवधी, भोजपुरी, हिन्दी, उर्दू जैसी जुबानों को बोला-समझा जाता था। इस प्रकार गायकी के साथ-साथ जुबान की ताकत भी उनके साथ हो गयी। महज तेरह बरस तक आते-आते वे गायकी का सितारा बन चुकी थीं। तेरह साल की उम्र में मेगाफ़ोन कम्पनी से उनका करार हो गया था। सोलह वर्ष तक आते-आते वे फिल्मों में अभिनय भी करने लगीं। 1942 तक वे फिल्मों में अभिनय करती रहीं। इस दौरान उन्होंने नल दमयन्ती, अमीना, मुमताज बेग़म, रूप कुमारी, जवानी का नशा, नसीब का चक्कर, अनारबाला, रोटी जैसी फिल्मों में काम किया। बहुत बाद में सत्यजित रे ने अपनी फिल्म 'जलसाघर' में उन्हें फिल्माया। बेगम अख़्तर ने इस फिल्म में बेहद भावपूर्ण दादरा 'भर भर आईं मोरी अँखियाँ पिया बिन' गाया है। मूलतः वे गायिका थीं, तो हुआ यूँ कि फिल्मों में गाये उनके गीत लोगों ने बहुत पसन्द किए, लेकिन उनके अभिनय में सहजता नहीं थी। इसलिए फिल्मों से उनका मन उचट गया, वे वापस लखनऊ आ गयीं। उन्हें महफिलों में गाने में सहजता महसूस होती। राजाओं, महाराजाओं, नवाबों जैसे कुलीनवर्ग की महफिलों में उनके गायन को सराहा जाता। वे गाना तो पसन्द करती थीं लेकिन उन्हें नाचना पसन्द नहीं था, इसलिए उन्होंने यह काम अपने यहाँ रहने वाली दूसरी औरतों पर छोड़ रखा था। इसी बीच उन्होंने पारसी नाटक कम्पनियों के लिए 'नयी दुल्हन' और 'लैला मंजनू' में भी काम किया।

बम्बई को छोड़कर जब उन्होंने लखनऊ में अपना ठिकाना बनाना चाहा तो इसके लिए उन्होंने हजरतगंज के तालुकेदारों की हवेलियों के आस-पास का इलाका चुना। ज़हूर बख्श चचा की इमारत के पास उन्होंने अपना घर बनाया और इसे 'अख़्तर मंजिल' का नाम दिया। यहां यह प्रसंग करना गैर मुनासिब न होगा कि उन दिनों लखनऊ में कोठों और मुज़रों की जगह चौक हुआ करती थीं। लोग वहाँ चोरी-छिपे जाते थे, लेकिन 'अख़्तर मंजिल' तहज़ीब का एक अलहदा मरकज़ बनकर उभरा। सफेद मीनारों वाला वह घर जिसमें चीनी मिट्टी के बर्तन के टुकड़े और हरे काँच के टुकड़ों को जड़ाऊ तरीके से लगाया गया था, सजावटी झरोखों से युक्त था, बेगम अख़्तर यहीं बैठकें करती थीं। ठोस सोने के पानदान में रखे पान के बीड़े को अपने मेहमानों को पेश करती थीं। बेगम की मकबूलियत का आलम यह था कि किसी निजी महफिल में अगर वे गायकी का न्यौता कुबूल कर लेती थीं, तो मेजबान की इज्जत बढ़जाती थी। नवाब रामपुर तो उनके ख़ास मेहमान हुआ करते थे।

बेगम की शादी खूबसूरत, इंगलैंड में पढ़े-लिखे वकील इश्तियाक अहमद अब्बासी से हुई जो कुलीन वर्ग के थे। यह शादी 1944 में हुई। शादी के बाद बेगम अख़्तर अपने शौहर के घर 'मतीन मंजिल' में रहने लगीं। बाद के बरसों में और भी कई दिलचस्प वाकये उनकी ज़िन्दगी से जुड़े। मसलन—'मतीन मंजिल' छोड़कर हैवलॉक रोड पर नया मकान खरीदना, ऑल इंडिया रेडियो के लिए गाना स्वीकार करना, ज़मींदारी उन्मूलन के बाद ठाठ-बाट बनाए रखने की चुनौती में आर्थिक रूप से कमजोर हो जाना, उस्ताद-शागिर्दी परम्परा में गंडा बाँधकर शागिर्द बनाना, गाने से रोकने के बाद अवसादग्रस्त हो जाना, रोजा रखना, मुहर्रम के दिनों में मर्सिया गाना और सोज़ ख्वानी कसा, संगीतकार मदनमोहन से उनकी दोस्ती आदि उनके अभिन्न किस्से थे।

'ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया' (शकील बदायूँनी), 'जिक्र उस परीवश का' तथा 'दाइम पड़ा हुआ तेरे दर पर नहीं हूँ मैं' (ग़ालिब), 'वो जो हममें तुममें तुममें क़रार' (मोमिन), 'उल्टी हो गयी सब तदबीरें' एवं 'दिल की बात कहीं नहीं जाती' (मीर तकी मीर), 'उज्र आने में भी है' (दाग़), 'सर में सौदा भी नहीं' (फ़िराक़ गोरखपुरी), 'शाम-ए-फ़िराक़ अब न पूछ' एवं 'आये कुछ अब्र कुछ शराब आये' (फ़ैज़ अहमद फ़ैज़), 'इतना तो ज़िन्दगी में किसी की ख़लल पड़े' (क़ैफी आजमी) तथा 'कुछ तो दुनिया की इनायात ने दिल तोड़ दिया' (सुदर्शन फाक़िर) जैसी तमाम सारी ग़ज़लों को सुनते हुए लगता है कि बेगम अख़्तर की जितनी पकड़ सुरों पर थी, उतना ही ध्यान उन्होंने इन शायरों के लफ्ज़ों पे किया है। वे सिर्फ़ मल्लिका-ए-ग़ज़ल ही नहीं थीं, बल्कि ठुमरी की भी बड़ी तादाद उनके पास मौजूद थी। 'कौन तरह से तुम खेलत होरी', 'तुम जाओ जाओ मोसे न बोलो', 'चली मोरी नैया किनारे किनारे', 'अँखियन नींद न आये', 'मैं तो तोरे दमनवा लागी', 'जब से श्याम सिधारे', 'न जा बलम परदेस', 'पिराई मोरी अँखियाँ' और 'बौरा रे! हम परदेसी लोग' में बेगम अख़्तर की ठुमरी में श्रेष्ठता और उत्कृष्टता को आसानी से महसूस किया जा सकता है। लोक परम्परा से जुड़े हुए 'ई सुन्दर सारी मोरी नइहर मा मइल भई/का लइके जइबै गवनवा हाय राम/ हे गंगा मईया तोहे पियरी चढ़इबै/पियवा से कइदा मिलनवा हाय राम' जैसे गीत को जिस अद्भुत कौशल के साथ उन्होंने गाया, वो अद्भुत है।

Scanned by CamScanner

दादरा का जिक्र किए बिना बेगम साहिबा की गायकी पर बात अधूरी रह जाएगी। उनके गाये प्रसिद्ध दादरा 'आये बलम करम मोरे जागे' तथा 'बलमवा तुम क्या जानो प्रीत' को सुनने पर उनकी उत्कृष्टता का अहसास होता है। बेगम अख़्तर ने कई शास्त्रीय बन्दिशों, जैसे 'लागी बेरिया पिया के आवन की' और 'कोयलिया मत कर पुकार, करेजवा लागे कटार' को इसी रूप में गाया।

हालाँकि इस पुस्तक में सम्पादक लेखक यतीन्द्र मिश्र ने बड़ी विनम्रता के साथ यह स्वीकार किया है कि ''यह दावा नहीं किया जा रहा कि हम बेगम अख़्तर को उनकी सम्पूर्णता में यहाँ परख रहे हैं। उनका व्यक्तित्व ही इतना विराट रहा है कि बहुत कुछ करने के बाद भी उससे कहीं अधिक छूट जाने की ख़लिश मन में है।'' लेखक और संगीत के विद्वान यतीन्द्र मिश्र का यह वक्तव्य सर्वकालिकता के पैमाने पर उचित ही प्रतीत होता है, किन्तु सच यह है कि अख़्तरी के बेग़म अख़्तर तक बनने के सफर को जिस बारीकी से इस कृति में सिलसिलेवार प्रस्तुत किया है वह उनकी विनम्रता को और भी आदरणीय बनाता है। 'अख़्तरी सोज़ और साज़ का अफसाना' के बहाने यतीन्द्र मिश्र ने किसी एक फ़र्द को नहीं बल्कि पूरी संगीत परम्परा और एक तहज़ीबी रवायत को सामने लाने का प्रयास किया है जिसके लिए निश्चित रूप से कोटिश: बधाई के पात्र हैं।

मो.: 9412290079

Scanned by CamScanner